कहानी के माध्यम से बच्चों को जोड़ना

अमृता मसीह

बतौर शिक्षक मेरा यह मानना है कि बच्चे उस विषय को ज़्यादा समय तक याद रखते हैं जो पारम्परिक शिक्षण विधियों की बजाय कहानियों द्वारा सिखाया जाता है। कहानी कहने की कला, विशेषकर भाषाओं के मामले में, बच्चों को इतने प्रभावी तरीक़े से जोड़े रखती है कि वे लम्बे समय तक अवधारणाओं या पात्रों को याद रख पाते हैं।

इस बात को ध्यान में रखते हुए मैंने सोचा कि क्यों न मैं अपनी शिक्षण योजना बनाने से पहले विद्यार्थियों से कहानी कहने के बारे में कुछ चर्चा करूँ और उनके विचार भी जान लूँ। यदि शिक्षक कक्षा की गतिविधियों के डिज़ाइन के बारे में बच्चों से सलाह लें तो इससे शिक्षकों को बच्चों की ज़रूरतों और रुचियों के अनुसार योजना बनाने और कक्षा प्रक्रिया में उनकी भागीदारी बढ़ाने में मदद मिलती है।

इसलिए मैंने बच्चों से पूछा कि वे कहानी कहने के बारे में क्या सोचते हैं। उन्होंने मेरे साथ अपने विचार इस प्रकार साझा किए : हमें कहानी के माध्यम से नए शब्दों और वाक्य संरचनाओं के बारे में पता चलता है। हम प्रश्न निर्माण करना भी सीखते हैं। पढ़ना-लिखना और वर्तनी आसान हो जाती है क्योंकि कहानी बहुत मज़ेदार होती है। हम नए शब्दों का सही उच्चारण सीखते हैं। बच्चों के विचार जानकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई। बच्चे हमारी तरह सोचते हैं, लेकिन हम वयस्क लोग कभी-कभी कक्षा प्रक्रियाओं पर उन्हें अपने विचार साझा करने के अवसर नहीं देते हैं।

जब शिक्षक बच्चों के साथ चर्चा करते हैं और योजनाएँ बनाते हैं, तो हम उन गतिविधियों के दौरान उनकी रुचि और जुड़ाव देख सकते हैं जिनके लिए उन्होंने भी अपने विचार दिए हैं। इसका एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है :

शिक्षक : जो कहानी हम आज या कल पढ़ने वाले हैं, उनके बारे में आपने जो विचार दिए थे, क्या हमें उन सभी विचारों पर ध्यान देना चाहिए?

बच्चे : नहीं, हम तीन विचारों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे।

शिक्षक : तो हमें किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?

बच्चे : हम कहानी से नए शब्द छाँटकर लिखेंगे। शब्दकोश में उनके अर्थ देखेंगे और नए शब्दों का प्रयोग करते हुए कुछ वाक्य बनाएँगे।

शिक्षक : ठीक है। हमें और क्या करना चाहिए?

बच्चे : हम पढ़ने और लिखने का अभ्यास करेंगे।

शिक्षक : तो चलो, पहले कहानी चुन लें।

कहानी कहने की गतिविधि के लिए कहानी चुनने के लिए मैंने उन्हें कुछ किताबें दीं। उन्होंने एलिस इन द वंडरलैण्ड को चुना।

मैं कहानी सुनाने लगी। सभी बच्चे ध्यान से सुन रहे थे, वे कहानी के चित्रों की सराहना कर रहे थे क्योंकि मैं उन्हें कहानी सुनाते-सुनाते चित्र भी दिखा रही थी। कहानी पढ़ते समय कुछ बच्चे मेरी आवाज़ में होने वाले उतार-चढ़ाव को ध्यान से सुन रहे थे। कहानी से दो अनुच्छेद पढ़ने के बाद मैंने उनसे कुछ प्रश्न पूछे, जैसे— मुझे कहानी के कुछ शब्द बताओ। अब तक कहानी में कौन-से मुख्य पात्र आए हैं? कहानी में किस बारे में बात की जा रही है?

कहानी में सुने कुछ शब्दों को सूचीबद्ध करने के बाद बच्चों ने कहा कि उन दो पैराग्राफ़ों में मुख्य पात्र एक छोटी लड़की और एक सफ़ेद खरगोश था। कहानी एक छोटी लड़की के बारे में थी जो एक खरगोश के पीछे भाग रही थी। हम बीच-बीच में कहानी की काल्पनिक दुनिया में आई विभिन्न वस्तुओं और पात्रों के बारे में भी बात कर रहे थे। कहानी समाप्त होने के बाद हमने उन विभिन्न शब्दों के बारे में बात की जो उन्होंने पहली बार सुने थे, उन्हें शब्दकोश में देखा और उन शब्दों के साथ वाक्य बनाए। उस दिन की कक्षा विद्यार्थियों के साथ एक अद्भुत अनुभव के साथ समाप्त हुई।

अगले दिन मैंने विद्यार्थियों को दो समूहों में विभाजित किया ताकि वे मिल-जुलकर सीख (पीयर लर्निंग) सकें। यह बच्चों के पढ़ने का दिन था और कुछ बच्चे कुछ शब्दों के उच्चारण के बारे में पूछ रहे थे।

अगले दिन की शुरुआत हमने एलिस इन द वंडरलैण्ड कहानी पर बने एक वीडियो देखने के साथ की। बच्चे पुस्तकालय के कमरे में चुपचाप बैठे थे जहाँ मैंने उनके लिए फ़िल्म की व्यवस्था की थी। हमने फ़िल्म देखने के बाद उसपर चर्चा करने का फ़ैसला किया। फ़िल्म देखने के बाद कुछ बच्चों ने कहा कि उन्होंने इससे पहले इतनी शानदार और काल्पनिक फ़िल्म

नहीं देखी थी। वे सभी फ़िल्म पर चर्चा करके बहुत ख़ुश थे। उन्होंने फ़िल्म का आनन्द लिया और हमने फ़िल्म और किताब के बीच के अन्तर पर चर्चा की। अगले दिन मैंने विद्यार्थियों से कहा कि वे एलिस और सफ़ेद खरगोश के बारे में अपनी ख़ुद की कहानी लिखें। मैं बच्चों द्वारा लिखी गई कुछ कहानियाँ और विभिन्न प्रश्न साझा करूँगी।

अन्त में मैंने कहानी पर आधारित छह वाक्य लिए और उनका क्रम बदल दिया। फिर बच्चों से कहा कि वे उन्हें उचित क्रम में व्यवस्थित करें। अधिकांश विद्यार्थी कहानी के वाक्यों को सही क्रम में रख पाए। हमने कुछ और गतिविधियाँ भी कीं, जैसे— शब्दों और अक्षरों के क्रम बदलना, रिक्त स्थान में तुकान्त शब्द आदि। यह सभी गतिविधियाँ बच्चों द्वारा तैयार की गई थीं।

कहानी कहने की यह गतिविधि बहुत उपयोगी रही क्योंकि विद्यार्थियों के मन में उन विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से भाषा सीखने की दिलचस्पी जागी जिनमें वे नियोजन के चरण से ही सक्रिय रूप से शामिल थे। इससे पता चलता है कि कुछ रणनीतियों को बदलने से शिक्षक के साथ-साथ विद्यार्थियों को भी सीखने में मदद मिलती है।

भाषा की कक्षा के लिए कुछ विचार

- शिक्षण योजना बनाने के चरण से ही कक्षा को शामिल करें लेकिन यह स्पष्टता रखें कि क्या पढ़ाया जाना है।
- योजना को छोटे-छोटे अंशों में विभाजित करें, जैसे कि कहानी को समझना, उसे पढ़ना, उसके बारे में लिखना, उच्चारण, अनुक्रमण आदि।
- सरल कहानी वाली पुस्तकें चुनें जिसमें बहुत सारे पात्र न हों।
- यदि सम्भव हो तो कहानी पर आधारित फ़िल्म दिखाएँ। इससे बच्चे कहानी के साथ अधिक गहराई से जुड़ेंगे।
- मौखिक और लिखित कार्य करवाएँ।

अमृता मसीह 2012 से अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़ में कार्य कर रही हैं। उन्होंने 2000 में एक निजी स्कूल में अपना शिक्षण कार्य शुरू किया जहाँ वे अँग्रेज़ी और विज्ञान पढ़ाती थीं। इसके बाद वे विज्ञान की शिक्षिका के रूप में काम करने लगीं। उन्होंने जीव विज्ञान और शिक्षा में स्नातक और रसायन विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। हाल ही में डीएलएड की पढ़ाई पूरी की है और उन्हें बच्चों के साथ काम करना पसन्द है। उनसे amrita.masih@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : नलिनी रावल